**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 26-08-2022, Accepted: 12-09-2022, Published: 28-09-2022**
**Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 23-26**

# समकालीन हिंदी विमर्शवादी साहित्य और स्त्री भाषा

**लक्ष्मी जोशी**
भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

**सारांश**
स्त्री भाषा बिना किसी लागलपेट के अपने विचार और भाव अभिव्यक्त करने में सक्षम देखी गयी है। भाषा में वाक्य गठन हो या शब्द चयन कहीं भी स्त्री चुकी नहीं है उसने बड़ी सजकता और बौद्धिकता से भाषा का प्रयोग किया है। स्त्री भाषा कहीं पर सरल और सामान्य दिखती है तो कहीं पर इतनी जटिल और बौद्धिक है कि सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति उसके भाव तक को समझ नही पाता । कहने का तात्पर्य स्त्री भाषा में जटिलता और सरलता दोनों का समन्वय पाया जा सकता है यदि हम स्त्री विमर्शवादी आलोचकों या समालोचकों की भाषा का अध्ययन करे तो भाषा में जटिलता और क्लिष्टता दिखाई पड़ेगी । आलोचना और विमर्श के लिए विचारधारा, आशय निरुपण और सैद्धांतिक की आवश्यता पड़ती है, इसलिए ऐसी रचनाओं में स्वतः भाषा में क्लिष्टिता आ जाती है । आलोचना और विमर्श ऐसी रचनाएं है जिसमें कल्पना से ज्यादा विचार विमर्श और तथ्यों की आवश्यता होती है।

**मूल शब्दः** बौद्धिकता, विमर्शवादी, पितृसत्तात्मक, आलोचनात्मक शैली, भूमंडलीकरण, सांस्कृतिक शोषण

## प्रस्तावना

प्राचीन सामाजिक मान्यताओं को तोड़ते हुए स्त्री भाषा जिस रफ्तार से समृद्धि की ओर बढ़ रही है, उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह भाषा दुनिया के अन्य तमाम भाषाओं को जल्द ही पीछे छोड़ देगी । इस बात में सत्यता इसलिए है कि आज जो स्त्री भाषा का स्वरुप हमारे सामने आ रहा है वह पुरुष भाषा की तुलना में अधिक सुगठित, निर्भिक और स्वतंत्रत है । स्त्रियों ने विषय वस्तु के साथ–साथ भाषीय पक्ष को भी आधुनिक मोड़ दिया है । पात्र, परिवेश और भाषा के चुनाव में स्त्रियों का विशेष ध्यान गया है । स्त्री भाषा बिना किसी लागलपेट के अपने विचार और भाव अभिव्यक्त करने में सक्षम देखी गयी है । भाषा में वाक्य गठन हो या शब्द चौयन कहीं भी स्त्री चुकी नहीं है उसने बड़ी सजकता और बौद्धिकता से भाषा का प्रयोग किया है । स्त्री भाषा कहीं पर सरल और सामान्य दिखती है तो कहीं पर इतनी जटिल और बौद्धिक है कि सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति उसके भाव तक को समझ नही पाता । कहने का तात्पर्य स्त्री भाषा में जटिलता और सरलता दोनों का समन्वय पाया जा सकता है । यदि हम स्त्री विमर्शवादी आलोचकों या समालोचकों की भाषा का अध्ययन करे तो भाषा में जटिलता और क्लिष्टता दिखाई पड़ेगी । आलोचना और विमर्श के लिए विचारधारा, आशय निरुपण और सैद्धांतिक की आवश्यता पड़ती है, इसलिए येसी रचनाओं में स्वतः भाषा में क्लिष्टिता आ जाती है । आलोचना और विमर्श येसी रचनाएं है जिसमें कल्पना से ज्यादा विचार विमर्श और तथ्यों की आवश्यता होती है । लेखक को व्यक्तिक पूर्वाधारों को छोड़कर निरपेक्ष विवेक का प्रयोग करना होता है । संक्षिप्त रुप में कहे तो अद्यतन सैद्धांतिकी ज्ञान, वैचारिकी, विवेचना शक्ति, संवेदनात्मक ज्ञान, सामयिक परिप्रेक्ष्य का पूरा आंकलन इस कार्य के लिए आवश्यक है । इसके अलावा लेखक की अंदरुनी दृष्टि की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है । किसी भी विषय वस्तु की आलोचना एवं विमर्श के लिए भाषा तो आवश्य है ही, ज्ञान के कार्यकारी पक्ष भी उतना ही आवश्यकता है । पुरुषों की तुलना में स्त्री आलोचकों की संख्या हिंदी में कम दिखाई पढ़ती है, इसका कारण स्त्री की दोहरी जिम्मेदारी और कार्य व्यस्ता को माना जा सकता है क्योंकि आलोचना और विमर्श पर कलम चलाने का मतलब है कि भाषा अभिव्यक्ति के ज्ञान के साथ–साथ विषय वस्तु का गहन गंभीर अध्ययन भी जरुरी है, लेकिन यह संतोषजनक बात है कि भारत में स्त्री आलोचको और विमर्शवादी लेखिकाओं की संख्या दिनानुदिन बढ़ रही है । यूं तो हिंदी में स्त्री विमर्श आलोचनात्मक लेखन की शुरुआत छायावादी कवयित्री महादेवी बर्मा से मानी जाती है । हिंदी में महादेवी का योगदान संस्मराणात्मक लेखन, रिपोतार्ज, रेखाचित्र के अलावा विमर्शवादी गद्य साहित्य में भी है महादेवी हिंदी कि येसी लेखिका है जिन्होंने हिंदी स्त्री भाषा के साथ–साथ स्त्री वैचारकी को भी लोगों के समक्ष रखा है । स्त्री के आदर्शवादी गुणों की चर्चा करते हुए इन्होंने स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक अधिकारों की मांग की है । इनकी भाषा काव्य में चित्रात्मक, रहस्यमय, आंलकारिक है तो गद्य में विचार वैविद्य और संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से भाषा का स्वरुप अत्यंत प्रौढ दिखाई पड़ता है । इनकी किसी भी रचना के चार पंक्तियां मात्र पढ़ने से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि लेखिका को शब्दों के अलावा वाक्य गठन और भाषा शैली के संबंध में सुझबूझ काफी गहरी है । महादेवी की भाषा में गंभीर चिंतन के अलावा सालीनता भी देखी जा सकती है । एक तरफ अनंत प्रेमी से मिलने की छपटाहट है दो दूसरी तरफ अपने अधिकारों के प्रति सजकता भी है । इसलिए हिंदी स्त्री भाषा का विकासक्रम महादेवी बर्मा से मानने में कोई हिचक नहीं होनी चहिए । इसके बाद स्त्री भाषा का विकास सीधे साठ और सत्तर के दशक में दिखाई पड़ता है । आलोचना के क्षेंत्र में स्त्री भाषा का विकास करने का श्रेय अनामिका (मन मांझने की जरुरत, स्त्रीत्व के मानचित्र, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा), कात्यायनी (दुर्गद्वार पर दस्तक, कुछ जीवंत कुछ ज्वलंत ), रमणिका गुप्ता (दलित चेतनाः साहित्यिक और सामाजिक सरोकार, निजधरे परदेशी, आदिवासी कौन, समय के साथ), मृणाल पाण्डे (परिधि पर स्त्री स्त्री, अधिकार और कानून, देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, स्त्री एक लंबा सफर), प्रभा खेतान ( बाजार के बीचः बाजार के खिलाफ, भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न, उपनिवेश में स्त्री ), मृदुला गर्ग (चुभते नहीं सवाल), नासिरा शर्मा (युद्ध और मुसलमान, औंरत के लिए औरत), मैत्रेयी पुष्पा (खुली खिड़कियां, सुनो मालिक सुनो) विभा देवसरे (स्वागत है बेटी), क्षमा शर्मा (स्त्रीवादी विमर्श समाज और साहित्य) आदि लेखिकाओं को जाता है जिन्हों ने स्त्री चिंतन और भाषा दोनों को इस पुरुष प्रधान समाज में एक बाराबरी का मुकाम दिलाते हुए स्त्री साहित्य को समृद्धि के शिखर तक

पहुंचाया है । इनकी रचनाओं में स्त्री जीवन की जरुरतों उसकी समाज में स्थिति और सुधार के पक्ष पर गहन, गंभीर बैद्धिक चिंतन दिखाई पड़ता है । अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने आलोचना के क्षेत्र में प्रचलित विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, तथ्यात्मक, व्याख्यात्मक, विवरणात्मक और आलोचनात्मक शैली का प्रयोग बढ़ी ही सुझबूझ से किया है । विषय वस्तु संबंधी अपने ज्ञान को साझा करने में वह कहीं हिचकिचाती नहीं है । स्त्री आलोचकों की नजर स्त्री को पीछे धकेलने वाले सभी तत्वों पर पड़ी है राजनीतिक, सामाजिक, अर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि राज्य के सभी पक्ष को खगाल ने काम स्त्री आलोचकों ने किया है । स्त्री अधिकार के मुद्दें आलोचना का प्रमुख विषय बने है । आलोचना के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए अनिता भारती, रजनी तिलक, सुशीला टांक भौरे सरला माहेश्वरी, इलिना सेन, सुधा सिंह, राधाकुमार, प्रभा दीक्षित, नीलम कुलश्रेष्ठ जैसी महिलाएं निरंतर संघर्षरत है । आलोचनात्म विमर्श के भारत में चले स्त्री आंदोन की जांच पड़ताल करने के साथ–साथ भारत में रहने वाली सभी वर्ग, जाति और समुदाय की स्त्री की दयनीय स्थिति और समस्याओं के निवारण के लिए सरल भाषा में सुझाव भी दिये है । स्त्री भाषा के विकास का दूसरा श्रेय स्त्री कथाकारों और उपन्यासकारों को जाता है । अपने बेवाक लेखन से पितृसत्ता के जड़ो को हिलाकर रखदेने वाली लेखिकाओं में कृष्णा सोबती (जिदंगीनामा, मित्रोमरजानी, सूरजमुखी अंधेरे), नासिरा शर्मा ( सातनदिया एक समंदर, ठीकरे की मंगनी, जींदा मुहावरे, अक्षयवट, कुइयाजान, जीरो रोड), राजी सेठ (निष्कवच, तत्सम), मृदुला गर्ग (अनित्य, उसके हिस्से की धूप, कठगुलाब, चित्तकोबरा), ममता कालिया (बेघर, नर कदर नरक, एक पत्नि के नोट्स, दौड़, अंधेरे का ताला, दुक्खम सुक्खम, कल्चर वल्चर, सपनों की होम, डिलीवरी) मैत्रेयी पुष्पा बेतवा बहती, इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्माकबूतरी, कहै ईसुरी फाग, चिन्हार, गुनाह बेगुनाह), अनामिका (अवांतरकथा, पर कौन सुनेगा, दस द्वारे का पिंजरा, तिनका तिनके के पास), प्रभा खेतान (आओ पेपे घर चले, तालाबंदी, अग्निसंभव, छिन्नमस्ता, अपने–अपने चेहरे, पीली आंधी, स्त्री पक्ष ) आदि है । जैसा कि हम यह जनते है स्त्री के लिए बेवाकी से लिखना पितृसत्तात्मक समाज में कितना चुनौति पूर्ण कार्य है । जिस समाज में स्त्री को उठने बैठने का तौर तरिका भी पुरुष की इच्छा के मुताबिक सिखाया जाता है उस समाज में स्त्री के विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति किसी अपराध से कम नहीं है । तसलीमा नसलीन द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति के कारण भोगी गई यातना आज भी वर्तमान है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुषसत्ता आज भी इस बात को स्वीकारना नहीं चाहती है कि स्त्री जैसी वस्तु जो उसके लिए बनाई गई है वो उसके विरुद्ध में खड़ी हो । उसकी अपनी भाषा हो, विचार वैशिष्ट हो, स्वतंत्र गतिविधियां हो । इसलिए वह तिलमिलाया हुआ दिखाई पड़ता है । आज जो बलात्कार की घटनायें आयें दिन पत्रिकाओं की सूर्खियां बन रही है वह उसी का नतिजा है । बहरहाल हमें भाषा के संदर्भ को देखना है तों इस तरह की सामाजिक घटनाओं को बड़े ही आकर्षक शैली में कृष्णा सोबती ने मित्रोमरजानी में अभिव्यक्त किया है । समाज का यथार्थ और पात्रों के चुनाव के साथ संवाद शैली का भी अद्भूत प्रयोग देखने को मिलता है । मित्रों आज की भारतीय महिलाओं का येसा उदाहण है जो अपनी इच्छाओं को दबाती नहीं बल्कि उन इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करती है । कृष्णा सोबती इस उपन्यास के माध्यम से पितृसत्ता द्वारा स्त्री के लिए बनाये गयें उन नैतिक–अनैति मूल्यों को तोड़ने का प्रयास करती है । स्त्री कठपुतली या गुड़िया नहीं है वह स्वतंत्र जीवंत आत्मा है इसलिए उसकी अनेकों व्यक्तिगत, सामाजिक और शारिरिक इच्छायें होती है जैसे विचारों को सशक्त भाषा शैली में प्रस्तुत किया है । राजेन्द्र यादव उनकी रचना कला के संदर्भ में लिखते है "उनकी रचना धड मास की आत्मा–प्रबुद्ध कद्दावर गर्वोन्नत औरत बनकर खड़ी होने लगती है । जरुरी है कभी–कभी रचना खुद रचनाकार को अनावश्यक और अप्रासांगिक बना जाती है ।"[1]

किसी भी उपन्यास की सफलता उसकी कथावस्तु और भाषा अभिव्यक्ति के कौशल पर आधारित होती है । कभी–कभी उपन्यास के पात्र इतने प्रसिद्ध हो जाते है कि लेखक उनके सामने गौण हो जाता है जैसे प्रेमचंद के उपन्यास का पात्र होरी, मदर उपन्यास का पात्र पावेल वैसे ही मित्रोमरजानी की पात्र मित्रो है । लेखिकाने उस पात्र को इतना सशक्त बना कर खड़ा किया है कि उसके हाव–भाव उसके व्यक्तित्व का निर्माण, संवाद शैली, उसके क्रियाकलाप, अभिव्यक्ति कला आदि इतनी दमखम रखने वाली है कि वह काल्पनिक पात्र जीवंत बन पड़ा है । मित्रो भारतीय नारी को पितृसत्ता की जकड़न से बाहर निकालने के लिए गढ़ी गई पात्र है । धर्म और संस्कृति के नाम पर दबने या कुंठाओं का शिकार होकर जीवन जीना उसे स्वीकार्य नहीं है । वह स्वतंत्र रुप में बिना लागलपेट के अपनी इच्छायों को व्यक्त करने का साहस रखती है । उसकी यही खूबी उसे अन्य पात्रो से विशेष बनाती है । इसलिए मित्रो की भाषा और उसका स्वाभाव स्त्री को उठने बैठने के तरिका सिकाने वाले समाज पर ही तमाचा बन जाता है । मित्रो के इस संवाद से उसके संपूर्ण चरित्र को समझा जा सकता है "देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता । बहुत हुआ घटते परिवार और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास की मच्छली सी तडपती हूं ।"[2] इसी तरह यदि हम नासिरा शर्मा की भाषा शैली का अध्ययन करे तो उनकी भाषा आम भारतीय जनता की भाषा है । उनके साहित्य में भारतीय ग्रामीण और शहरी जीवन का सजीव चित्रण मिलता है । इनकी भाषा इतनी प्रभावशाली है कि पात्र सजीव हो उठता है और पाठक की रुचि बढ़ जाती है । साहित्य और भाषा का घनिष्ट संबंध का उदाहरण इनकी भषा में दिखाई पड़ता है शांतिस्वरुप गुप्त ने साहित्य और भाषा के संबंध में जो विचार व्यक्त किये है "भाषा उपन्यासकारों के हाथों में एक शक्तिशाली उपकरण है । वह शब्द योजना, वाक्य संरचना, वाक्य विन्यास और ध्वनी पैटर्न के प्रयोग द्वारा अपनी बात को विशेष प्रभावशाली ढंग से संम्प्रेषित करने में समर्थ होता है । पाठक पर विशेष प्रभाव डाल सकता है ।"[3] यही भाव भाषा के संबंध में नासिरा शार्मा के साहित्य में देखा जाता है । उनकी भाषा भाव और उद्देश्य की वाहक है इन्हों ने पात्रों के परिवेश और स्वभाव के आधार पर ही भाषा का अवलंबन किया है । नासिरा की शिक्षा फारसी में होने के कारण इनके साहित्य में अरबी और फारसी के शब्द अधिक दिखाई पड़ते है। इस बात से यह भी प्रमाणित होता है कि लेखक के परवरिश का प्रभाव उसके साहित्य में भी दिखाई पड़ता है लेखक चाह कर भी उसे छुपा नहीं सकता । इसके अलावा इनके साहित्य में इलाहबाद की बोली और वहां की संस्कृति भी देखी जा सकती है । जिंदा मुहावरे उपन्यास में नासिरा ने उत्तर प्रदेश के फैजाबाद गांव की संस्कृति को दिखाया है, वहां की बोली, परिवेश, संस्कार, वातावरण, रहन–सहन सभी को पूरी तरह समेटने में नासिरा सफल हुई है । नासिरा ने साहित्य में मुहाबरे और लोकोक्तियों का प्रयोग कर के भाषा को और अधिक आकर्षक बनाया है । तारीफों के पुलबांधना, तहलका मचाना, अरमान धरा का धरा रहना, भ्रम टूटना, कटी पतंग की तरह डोलना जैसे प्रचलित मुहावरें और लोकगीत इनके साहित्य को ग्रामीण जीवन की आभा दिलाते है । सात नदिया एक समंदर में उन्होंने इरानी लोकगीत का भी प्रयोग किया है । स्त्री जीवन इनके साहित्य में कुंठा, अकेलापन, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक शोषण के रुप में देखा जाता है । नासिरा का शाल्माली उपन्यास भारतीय समाज में विवाह संस्कार के नाम पर किये जाने वाले शोषण को दिखाता है । शाल्माली

और नरेश का विवाह होता है विवाह के पश्चात शाल्माली को यह अहसास होता है कि नरेश उसका पति से भी ज्यादा उसका मालिक बनना चाहता है और उसे पत्नि नहीं सेविका के रुप में देखना चाहता है । विवाह के नाम पर खड़ी इस मजबूद दीवार को शाल्माली हमेशा मेहसूर करती रहती है जो उसके जीवन में कांटे की तरह चुभता रहता है । नरेश हमेशा शाल्माली को यह तंज कसता है कि "तुम ठहरी एक आधुनिक विचार की महिला..... विचारों में स्वतंत्र, व्यवहार में उनमुक्त, तुम्हारे संस्कार हम से अलग है ।"[4] नरेश के इन बातों से शाल्माली घृणा होने लगती है शाल्माली में लेखिकाने नारी का एक अलग और आधुनिक रुप दिखाने का प्रयास किया है । शाल्माली भारतीय समाज में स्त्रियों के लिए निर्धारित किये गये रुढ़िवादी मान्यताओं को स्वीकार नहीं करती है वह वह अपने महजूदगी का अहसास दिखाना चाहती है । परिस्थिति चाहे जितनी भी विपरीत क्यों न हो आदमी को अपने खिलाफ हो रहे अत्याचार के प्रति मौन नहीं होना चाहिए के विचार इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है । समकालीन स्त्री लेखन के आधार पर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारतीय स्त्रिोंयों ने विवाह के पीछे छुपे स्त्री शोषण के रहस्य को पहचांन लिया है और अब वह विवाह को जीवन के लिए अति आवश्यक नहीं मानती । जिस तरह पुरुषों के लिए विवाह उनकी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए कानूनी स्वतंत्रता थी । आज की स्त्री इस स्वतंत्रा पर अंकुश लगाना चाहती है । इसलिए उन्होंने विवाह बिना के संबंध को भी कानूनी मान्यता देने की मांग की है ताकि स्त्री के चरित्र पर कोइं सवाल न उठे और विवाह जैसी संस्थाओं के कारण उसका शोषण भी न हो । बिना विवाह के माँ बनने का अधिकार और लिभिंग रिलेशनशिप इसी अवधारणा की उपज है । स्त्री के विचारों में आये इस परिवर्तन के कारण पितृसत्ता का ढांचा अब चरमरा रहा है । स्त्री समाज के इस बदलाव के संदर्भ में राकेश कुमार लिखते है "समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री अपनी स्थिति को नियती मानकर नहीं देखती, अपितु इन स्थितियों के जिम्मेदार तत्वों, पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाओं के अंतर्विरोधों कारणों को भी तलाशती है कि उनकी निष्क्रिय, कमजोर, उपेक्षित, उत्पीड़ित स्थिति किसीने बनाई और क्यों ? यही स्त्री लेखन की शोच में बुनियादी बदलाव है ।"[5]

यानी हम कह सकते है कि आज के स्त्री लेखन में विचार और चिंतन का गहन रुप देखा जा सकता है । नासिरा का दूसरा उपन्यास ठिकरे की मंगनी स्त्री की एक अगल संघर्ष गाथा को हमारे सामने रखता है । स्त्रियां आजादी के बाद यह समझ पायी है कि मेहनत, लगन और योग्यता के बल पर अपनी एक अलग पहंचान बनाई जा सकती है । महरुख के जीवन में ठहराव था इसके अलावा उसमें यह खूबी थी कि वह बहुत से लोगों को साथ लेकर चल सकती थी । इसी कारण उसने भीतर और बाहर के सत्य को पहचान और इसके दम पर वह अपने जीवन पर आगे बढ़ती है । महरुख के जन्म के साथ ही ठीकरे की मंगनी हुई थी । तेज रप्तार से अगे बढ़ रहे इस समाज में पितृसत्ता के मूल्यों को स्वीकारने पर महरुख को विवश कर दिया जाता है । यह उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी घटना थी । ठोस इरादे और नजरिये के कारण वह इस थोपी हुई सत्ता के खिलाफ खड़ी हो जाती है । एक तरफ गरीब असहाय लोगों की सेवा को वह अपना जीवन का लक्ष बना लेती है तो दूसरी तरफ परंपरागत पितृसत्ता के ढ़ांचे के खिलाफ लड़ती है । स्त्री विमर्श की दृष्टि से नासिरा शर्मा का साहित्य उत्कृष्ट श्रेणी में आता है । भाषा वैविध्य ने इनके साहित्य में चार चाद लगा दिया है । इन्होंने अपनी रचना को और अधिक आकर्षक यथार्थ परक और रोचक बनाने के लिए विविध भाषा शैली का प्रयोग किया है । वणर्नात्मक शैली, पूर्वदीप्त शैली, चित्रात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली आदि इनकी भाषा को रोचक बनाते है । साहित्य और समाज के संबंध को एक कुशल रचाकार अपनी भाषा के माध्यम से ही यथार्थपरक रुप में उसकी प्रगाढ़ता को प्रस्तुत करता है । हिंदी विमर्श लेखन में ममता कालिया ने इसी तरह का उदाहण पेश किया है उनकी कालजयी रचनायें स्त्री भाषा का विकास में महत्वपूण र्योगदान देती है । इनकी रचनाओं में स्त्री भाषा का विविध पक्षीय विकास देखा जाता है । ममता कालिया हिंदी साहित्य में अपने बेवाक लेकन के लिए जानी जानी जाती है । उनके रचनाओं के पात्र यथार्थ की जमीन पर चढ़ते–उतरते मिलते है । स्त्री जीवन जो भारतीय समाज में जीता नहीं रेंगता है, हर वर्ग, जाति और हर क्षेत्र की स्त्री उनके साहित्य में अपना यथार्थ चुटिले अंदाज में बयान करती हुई दिखाई पड़ती है । ममता कालिया को जो व्यक्तित्व है उनकी रचनायें उससे अलग दिखाई पड़ती है । जब वह रचना के धरातल पर उतरती है तो पितृसत्ता के जडों को हिला कर रख देती है । उनकी बेवाकी का अंदाजा इन पक्तियों से लगाया जा सकता है ।

"प्यार शब्द घिसते–घिसते चपटा हो गया है ।
अब
हमारी समझ में हवस आता है ।"[6]

सन् 1960 में इन की यह कविता प्रकाशित हुई और लंबे समय तक चर्चा में भी रही । साहस, आक्रोश, विवशता, उत्तेजना, विरोध इनकी रचनाओं का मुख्य आकर्षण है । इनके उपन्यासों की तरह कहानियां भी भारतीय समाज में व्याप्त अभाव, उत्पीडन, बेरोजगारी, शोषण आदि का चित्र खिचती दिखाई पड़ती है । पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति को वे कुछ इस तरह बयान करती है "दुनियाभर में विवाहित औरतों का केवल एक स्वरुप होता है । उन्हें सहमति प्रधान जीवन जीना होता है... हर घर का एक ढर्रा है जिसमें आपको फिट होना है...घर को सुचारु रुप से चलाने के लिए सिर्फ दो शब्दो की जरुरत है, 'जी' और हाँ जी ।"[7] भारत में पितृसत्तात्मक संरचना और पुरुष की दोहरी मानसिकता को लेखिका ने कम से कम शब्दों में सटिक व्याख्या की है । इनका मानना है पुराने पितृसत्तात्मक समाज की तुलना में आज के पितृसत्तात्मक समाज में आधुनिकता आई है, आज का पुरुष चाहता है "पत्नि शिक्षित हो परंतु दबकर रहे, आधुनिक हो लेकिन आज्ञाकारी हो, समझदार हो परंतु अलग सोच विचार वाली न हो ।"[8]

इस परिवर्तन से पढ़ी लिखी औरतें भी प्रभावित हुई है । पढ़ी लिखी औरतें पितृसत्ता के नियंत्रण में रहने के लिए मजबूर बनाई जा रही है । आर्थिक क्रांति के कारण दुनिया में आ रहें बदलाव का शिकार भी अधिकतर स्त्रियां ही बन रही है । चाहे वह विज्ञापन के नाम पर हो या ग्लैमर के नाम पर हो या फिर सौंन्दर्य प्रतियोगिता के नाम पर हो स्त्री शोषण की नयी पद्धतियों दुनिया में देखी जा रही है । झूठ, फरेब और धोखाधडी से भरे इस पुरुष साम्रज्य की पोल खोलते हुए ममता कालिया मेला कहानी में लिखती है "इतना विशाल मेंला क्या कुछ भी कालातीत सिखा पायेगा या वैसे के वैसे अपने संकीर्ण सरोकारों में वापस हो जायेगा । जो झूठ बोलता है, बोलता रहेगा, जो घूस लेता है लेता रहेगा, जो मिलावट करता है करता रहेगा जो चोरी करता है, करता रहेगा, और जो कामचोरी करता है करता रहेगा । औरत के जीवन में इस एक डूबकी से क्या हो जायेगा । उनकी हातल बदलेगी ? गगांमाई में पाप सचमुच धुले या यह भी एक सरलीकरण है जिसकी स्वीकृति में ही फिलहाल निष्कृति है ।"[9] स्त्रियों का कटाक्ष केवल पुरुषों के लिए ही नहीं है पुरुषत्ता के भीतर पितृसत्तात्मक मानसिकता रखने वाली स्त्रियों के लिए भी है। लेखिकाओं ने कई येसे स्त्री पात्रों की रचना की है जो पितृसत्तात्मक मानसिकता से ग्रस्त है ।

चाक उपन्यास में रेशम की सास हुकमकौर येसी ही पात्र है जो चाहती थी कि उनकी विधावा बहू रेशम ताउम्र पतिव्रता धर्म का

पालन करे । इसलिए विधवा रेशम के माँ बनने की खबर सुनकर कहती है कि "रंडी मेरे पूत की चिता तो सीरी हो जाने देती ।"[10] इस आधार पर हम यह कह सकते है कि स्त्रियों ने समाज को विविध पक्ष से देखने का प्रयास किया है । चाक भारतीय बदलते ग्रामीण परिवेश की कई घटनाओं को समेटकर लिखा गया उपन्यास है । इसमें स्वतंत्रता के बाद के समाज को चित्रात्मक, वणर्नात्मक और आलोचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है । नब्बे के दशक में स्त्री लेखन को एक विशेष ऊँचाई प्रदान कराने का काम किया है मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में ग्रामीण स्त्री जीवन की जटिलटताओं और उनसे जुझरही स्त्रियां इदन्नमम् की मंदा, चाक की सारंग और रेशम, अल्माकबूतरी की अल्मा और झूलानट की शीलो को येसे प्रस्तुत किया है जैसे वे हमारे बीच की स्त्री पात्र है । पाठको को लेखिका ने कही भी अहसास नहीं होने दिया है कि वह कोई काल्पनिक पात्र है । कभी उपन्यास पढ़ते पढ़ते पाठक भावुक हो जाता है तो कभी आवेश में आ जाता है यह लेखक की भाषिक कला का ही परिणाम है । लेखक, पाठक और रचनाओं का संबंध केवल रचना पढ़ने तक ही नहीं होता बल्कि कुछ रचनायें पाठक का जीवन परिवर्तन करने का सामर्थ्य रखती है और आजीवन उसके स्मरण में रहती है मैत्रेयी की रचनाओं का प्रभाव भी स्त्री जीवन पर येसे ही पड़ा है। स्त्री जीवन से लेकर ग्रामीण जीवन के विविध पक्षयों का चित्रण उनके साहित्य में देखा जा सकता है । चाक उपन्यास में अत्तरपुर गांव का पूरा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश को समेटा गया है । अत्तरपुर गांव की जीवन शैली, भाषा, त्योहार, लोकगीत, खान–पान, खेत खलियान आदि सभी का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अद्भूत रुप में किया है । "खेतों में अच्छी पैदावार होती है । कभी हरी रंगत से नहाए पसार के पसार, कभी सुनहरी बालों से भरे चक । सरसों, अलसी, मटर, चना और अरहर के पीले, गुलाबी, बैंगनी और चितकबरे फूलों के अलावा गेंदे का फूल भी लोगों ने उगते देखा है यहां ।"[11] इस अभिव्यक्ति ने लेखिका के ग्रामीण जीवन के संबंधी प्रयाप्त जानकारी को तो व्यक्त किया ही है साथ ही एक सुंदर आकर्षक ग्रामीण जीवन का चित्र खिचकर लोगों को ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित कराने का प्रयास भी किया है । सामान्य रुप में यह कहा जा सकता है कि स्त्री लेखिकाओं ने तत्कालीन समय में प्रचलित सभी आधुनिक गद्य एवं पद्य विधाओं में कलम चलाते समय शैली एवं भाषा के साथ–साथ अपने विचार एवं भाव की अभिव्यक्ति को भी अधिक महत्व दिया है । इनकी भाषाओं में ठेठ ग्रामीण, शहरी भाषा लगायत अंगेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, ब्रज, अवधि, भोजपुरी, मैथिली आदि का प्रयोग देखा जा सकता है। पात्रों के चरित्र के मुताविक भाषा चौयन उत्कृष्ट दिखाई पड़ता है । इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्त्री भाषा का विकास साठ के दशक से निरंतर बढ़ रहा है । आज की स्त्री भाषा में एक विशेष परिवर्तन देखा जा सकता है। वह यह है कि लेखिकाओं ने प्रत्येक व्यवसाय में प्रयोग किये जाने वाले विशेष शब्दों के प्रयोग पर भी ध्यान दिया है । मसलन राजनीति में प्रयोग किये जाने वाले शब्द विधायक, प्रतिपक्ष, सत्तारुढ़, निवार्चन, सांसद, ऐन कानून, धारा जैसे शब्द उनकी नजरों से नहीं छूटे है। इसी प्रकार तकनीकि शब्दों का प्रयोग, कानूनी भाषा का प्रयोग, व्यवसायिक भाषा का प्रयोग, प्रशासनिक भाषा का प्रयोग बढ़ी कुशलता के साथ स्त्री लेखन में दिखाई पड़ता है। संवाद शैली हो या लोकोक्तियों का प्रयोग कथा की मांग के मुताविक रुचिकर बन पढ़ते है। स्त्री भाषा की इस सफलता का श्रेय समकालीन स्त्री लेखिकाओं को जाता है, जिन्होंने अपने अथक प्रयास से स्त्री भाषा को ये मुकाम दिलाया है

## संदर्भ सूची


1. यादव, राजेन्द्र, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, पृ.153
2. सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, पृ. 41
3. http://www.milliyaresearchportal.org
4. http://www.ijim.in
5. (सं.) चौबे, देवेन्द्र कुमार, यादव, अजय कुमार, तेली, गणपत, हिंदी साहित्यका इतिहास कुछ पाठ कुछ विचार, पंचकूला प्रकाशन, पृ.361
6. http://www.grihaswamini.in
7. वही
8. वही
9. वही
10. पुष्पा, मैत्रेयी, चाक, राजकमल प्रकाशन, पृ. 19
11. वही पृ. 26